आधुनिकता एंव भारतीय संस्कृति

डॉ0 राम राजन द्विवेदी
प्रवक्ता, समाजशास्त्र
श्री राम जानकी इ. कॉ. रूपैडीहा, बहराइच, उ0प्र0

शोध–सार

समकालीन भारतीय समाज आधुनिकता से आगे उत्तर आधुनिकता के दौर से गुजर रहा है। वैश्वीकरण के दौर में इन अवधारणाओं एंव इनके माध्यम से परिवर्तनकारी प्रक्रियाओं की व्याख्या और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। यूरोप में आधुनिकता का उदय जहाँ पुनर्जागरण एंव प्रबोधन काल के परिणाम स्वरूप हुआ भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ। ब्रिटिश शासन का आंशिक हस्तक्षेप भारतीय परम्परा में भी हुआ तथापि इनमें कोई विशेष एंव तीव्रगामी परिवर्तन नहीं हुए। भारतीय समाज के मौलिक आधार अभी भी बने हुए हैं। आधुनिकता एक दीर्घगामी एंव समय साध्य प्रक्रिया है जिसके प्रभाव दूरगामी होंगे। तार्किकता, धर्मनिरपेक्षता, व्यक्तिवाद, अर्जन के मूल्यों पर बल, सार्वभौमवाद, मानववाद, विशिष्टता, परानुभूति, गतिशीलता, पूंजीवाद तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास आधुनिकता के लक्षण हैं ये विशेषतायें आधुनिक भारतीय समाज की है। अतः आधुनिकता की ओर उन्मुख है।

मुख्य शब्दः *आधुनिकता, भारतीय संस्कृति, उत्तर आधुनिकता, वैश्वीकरण, पुनर्जागरण, प्रबोधन, वाणिज्यिक क्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति, फ्रांसीसी क्रान्ति, तर्कसंगतता, विध्वंस समाज ।*

आधुनिकता एंव उत्तर आधुनिकता की अवधारणायें ज्ञान–विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित कर रही हैं। ये अवधारणायें जहां एक ओर परिवर्तन की प्रक्रियाओं की ओर संकेत करती हैं, वहीं दूसरी ओर समाज की अवस्थाओं और विश्लेषण की दृष्टि जैसे आयामों को अपने में समेटे हुये हैं। ये अवधारणायें यद्यपि पश्चिमी समाज में उपजी परन्तु तीव्र गति से प्रसारित होते हुए सम्पूर्ण विश्व को अपने में समाहित कर लेती है। वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में जहां विश्व एक गांव के रूप में परिवर्तित होता जा रहा है, आधुनिकता एंव उत्तर आधुनिकता का विमर्श अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। भारतीय समाज भी इन तीव्रगामी परिवर्तनों से अच्छादित है भारतीय संस्कृति के प्रमुख आधार इन प्रक्रियाओं के प्रभाव में अपने पारंपरिक अर्थ खोते जा रहे हैं एंव नवीन अर्थ ग्रहण करते जा रहे हैं।

आधुनिकता का जन्म पश्चिमी यूरापीय समाज में मध्यकाल के पतन से प्रारम्भ होता है। मध्यकालीन यूरोप की तीन शक्तिशाली संस्थायें राजतन्त्र, चर्च और सामंत, अनेक कारकों से समाप्त हुई और इनका स्थान लोकतंत्र, धर्म निरपेक्षता और पूंजीवाद ने ग्रहण किया। पुनर्जागरण (रैनेंसा) एंव प्रबोधन काल (Enlightenment)के इन परिवर्तनों के लिये आधार उत्पन्न किया, तो प्राकृतिक विज्ञानों के विकास, भौगोलिक खोजों, वाणिज्यिक क्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति, फ्रांसीसी क्रान्ति एंव प्रोटेस्ट आंदोलनों ने इसे संपूर्णता प्रदान की थी।

उपरोक्त कारकों के परिणामस्वरूप19 वीं शताब्दी के मध्य (A.D.) तक यूरोप में एक नये तरह का समाज उभरकर सामने आया। यह समाज नवीन विशेषताओं से युक्त था। इन विशेषताओं को समग्र रूप में आधुनिकता की संज्ञा दी गई। ये विशेषताएं निम्न हैः

(क) यूरोपीय समाज में व्यक्तियों के कार्य एंव व्यवहार में तर्कसंगतता बढ़ती गई अर्थात् व्यक्ति की उद्देश्यों एंव उन्हें प्राप्त करने के साधनों की गणना व्यक्तियों के व्यवहारों एंव अन्तर्क्रियाओं में बढ़ती गई।

(ख) समाज में धर्म एंव चर्च का महत्व कम हुआ। राज्य एंव धर्म के अंतर्संबंध टूटे और धर्म निरपेक्ष राज्य का उदय हुआ।

(ग) समूहवाद का स्थान व्यक्तिवाद ने ले लिया अर्थात निर्णय निर्धारण में परिवार, नातेदारी के स्थान पर व्यक्ति की इच्छायें महत्वपूर्ण होती गईं।

(घ) प्रदत्तता के मूल्य का स्थान अर्जन के मूल्य ने ले लिया। अब व्यक्ति का पद समाज के सोपान क्रम में उसके अर्जन पर आधारित था, न कि कुलीनता, नातेदारी एंव आयु पर।

(ड.) सार्वभौमवाद, मानववाद एंव विशिष्टता जैसे मूल्य आधुनिक समाज की अन्य विशेषतायें थीं।

(च) परानुभूति (Empathy) एंव सामाजिक गतिशीलता इस समाज की अन्य महत्वपूर्ण विशेषतायें हैं।

(छ) आर्थिक क्षेत्र में आधुनिकता, पूंजीवादी उत्पादन की पद्धति को विकसित करती है। यह पूंजीवादी पद्धति 'अधिकतम लाभ' की प्रेरणा से संचालित होती है तथा बाजार की शक्तियों से नियंत्रित निर्देशित होती है। यह पूंजीवादी व्यवस्था आर्थिक क्रियाओं के तार्किक संगठन (नौकरशाही) इसे क्रियान्वित करता है।

(ज) इसी प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में आधुनिकता लोकतंत्र का पर्याय है। लोकतंत्र में जनता की सरकार होती है जो जनता की सहभागिता से संचालित होती है।

उपरोक्त विशेषताओं के आधार पर सूत्रबद्ध रूप में कहा जा सकता है यह नवउदित आधुनिक समाज पारम्परिक समाज से भिन्न था। इस नवीन समाज के उद्भव ने 19वीं शताब्दी के बौद्धिक जगत में उथल – पुथल मचा दी। पूरा 19वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध इसी आधुनिक समाज के अध्ययन से भरा पड़ा है। आधुनिक समाज के वैज्ञानिक अध्ययन के प्रयासों ने 'समाजशास्त्र' रूपी एक नये विषय को जन्म दिया। दुर्खीम इस समाज को 'सावयवी एकता' के आधार पर विश्लेषित करते हैं। कार्ल मार्क्स इसे पूंजीवादी और शोषक समाज के रूप में चिन्हित करते हैं और इस समाज के अंत पर भविष्य के समाजवादी समाज के निर्माण की बात करते हैं। मैक्स वेबर इसे 'तर्कसंगत' समाज के रूप में स्वीकार करते है। 20 वीं शताब्दी के अनेक विश्लेषक आधुनिक समाज का निराशाजनक विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। हेबरमास आधुनिकता को अधूरा प्राजेक्ट मानते हैं। उल्रीच बैंक इसे जोखिम भरा समाज मानते है। झीगमूंट बोमन (Zygmunt Bouman) इसे 'विध्वंस समाज' की संज्ञा देते है।परन्तु आधुनिकता जहां एक ओर समाज की अवस्था की ओर संकेत करती है वहीं दूसरी ओर समाजों की तुलना के लिये दृष्टि प्रदान करती है। आधुनिक मूल्य एंव व्यवस्था के आधार पर समाजों को पारंपरिक, मध्यवर्ती एंव आधुनिक आदि अवस्थाओं में रखा जा सकता है।

भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अंग्रेजों के शासन से प्रारम्भ मानी जाती है। मशीनीकरण, रेलगाड़ी, छपाई की मशीन आदि आधुनिकता के प्रमाण हैं। एम0 एन0 श्रीनिवास जैसे विद्वान प्रजातंत्र एंव पूंजीवाद को आधुनिकता का अंग नहीं मानते। वे उद्योगवाद को भी आधुनिकता की कोटि में नहीं रखते हैं। यदि श्रीनिवास के आंकलन को छोड़ भी दे तो हम यह कह सकते है कि उपनिवेश काल में भारतीय परंपराओं एंव आधुनिकता के बीच कोई जबरदस्त मुठभेड़ नहीं हुई। अंग्रेज स्वयं यह चाहते थे कि भारतीयों के सामाजिक जीवन में कम से कम हस्तक्षेप करें। वे किसी भी कीमत पर अपने शासन को सुदृढ़ करना चाहते थे। इसलिए अंग्रेजों ने सती प्रथा, बाल विवाह, और विधवा पुर्नविवाह जैसे विषयों में आंशिक हस्तक्षेप किया। इसका अर्थ यह हुआ कि उपनिवेशकाल में आंशिक रूप से आधुनिकता आई लेकिन परम्पराओं में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ।

भारतीय संस्कृति के प्रमुख पारम्परिक तत्वों की बात की जाये तो चार प्रमुख लक्षण उभरते हैं –

1. सोपानिकता (Hierarchy)
2. समग्रता (Holism)
3. निरन्तरता (Continuity)
4. अनुभावतीतता(Transcendence)

ये लक्षण बताते हैं कि भारतीय समाज श्रेणीबद्ध है। इसमें वर्ण, जातियां, उप जातियां हैं। जीवन क्रम भी श्रेणियों में बंटा है। यहाँ आश्रय है, और यहां मनुष्य की प्रकृति सत्, रज और तम में बंटी है। दूसरा, भारतीय समाज में समूह ही व्यक्ति की पहचान है, व्यक्ति स्वयं में कुछ नहीं है। इसी लक्षण को समग्रतावाद कहा गया है। समाज की एकीकृत प्रकृति निरन्तरता प्रदान करती है। कर्म एंव पुनर्जन्म का सिद्धांत निरन्तरता प्रदान करने वाला प्रमुख आधार है। यहां व्यक्ति के अकेले के एक जीवन का कोई अर्थ नहीं है बल्कि एक जन्म अनेक जन्म की श्रृंखलाओं का एक भाग मात्र है और आत्मा की अनंत यात्रा का एक पड़ाव मोक्ष यहां प्रत्येक व्यक्ति का सर्वोच्च लक्ष्य है और मोक्ष की तलाश में आत्मा पुनर्जन्म के चक्र में घूमती रहती है। किसी जन्म में पुण्य कर्म करने से ही उसे मोक्ष प्राप्त हो सकता है। अंत में भारतीय समाज की विशेषता अनुभाववीतता है। अर्थात् परम्परायें मूल्य आधारित है। मूल्यों को सामाजिक वैधता प्राप्त है इसमें व्यक्तिगत अनुभव कुछ नहीं कर सकता और न ही इसे तर्क और बहस की कसौटी पर कसा जा सकता है।

अतः कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति का मुख्य भाग हिंदू परम्परा की अपनी एक निश्चित पहचान है। जब आधुनिकीकरण की अन्तः क्रिया हिंदू परम्परा के साथ होती है तो आधुनिकता एंव परम्परा दोनों में परिवर्तन आता है।

विकासशील देशों में और विशेषकर दक्षिण एशिया में जहाँ कहीं आधुनिकीकरण का मुकाबला परम्परागत समाजों के साथ हुआ है वहां परम्पराओं ने बराबर अपनी निरन्तरता और पहचान को बनाये रखने का प्रयास किया है। भारतीय समाज में आधुनिकीकरण ने समाज का ऊपर आवरण तो बदला है परन्तु समाज के केन्द्रीय मूल्य बराबर बने हुये हैं। आधुनिकीकरण को लगातार इन केन्द्रीय मूल्यों से जूझना पड़ा है। नही ंतो यह क्या बात है कि कानून बन जाने के बाद स्त्रियों को पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार नहीं मिलता है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनैतिक दल जाति के आधार पर टिकट देते है और मंत्री बनाते है । इसी प्रकार बैंक, पुल या बांध निर्माण से पूर्व भूमि–पूजन होता है और पंच–सितारों की जगमगाहट में अपने से कम जानकार पंडित के आदेशों पर विवाह में सात फेरे लेने पड़ते हैं। टी0वी0 सीरियलों में सास–बहू के सीरियल सर्वाधिक टी.आर.पी प्राप्त करते हैं।

निष्कर्ष –स्पष्ट है कि आधुनिकता के मुठभेड़ में परम्परायें समाप्त नहीं होती, बल्कि वे निरन्तरता और लचीलापन दर्शाती हैं। आधुनिकीकरण से कृषक –सामन्ती अर्थव्यवस्था, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में बदल गई, बाजारोन्मुखी हो गई परन्तु आधुनिकता ने परम्परागत – समाज को नई भूमिका सरंचना प्रदान की है। उदाहरणार्थ जाति व्यवस्था ने आधुनिकीकरण के संदर्भ में वोट बैंक का रूप ग्रहण कर लिया है। परन्तु ज्यों–ज्यों आधुनिकीकरण का प्रभाव समाज पर बढ़ेगा, वैश्वीकरण तीव्रतम होगा। सूचना संचार का विस्फोट होगा त्यों–त्यों पारम्परिक मूल्यों में परिवर्तन आयेगा। यह एक लम्बी और समय साध्य प्रकियाहोगी।

संदर्भ सूची–

1. दुबे, श्यामाचरण, (2010), विकास का समाजशास्त्र, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।
2. दुबे, श्यामाचरण (अनु. वंदना मिश्र), (2001), भारतीय समाज, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया।
3. सिंह, योगेन्द्र (अनु. अरविन्द कुमार अग्रवाल), (2006), भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
4. अहमद, मेराज, (1994), विकास का समाजशास्त्र, विश्वप्रकाशन (वाइली ईस्टर्न लि0 का प्रभाग), नई दिल्ली।
5. सिंह, योगेन्द्र, (1999), भारत में सामाजिक परिवर्तन संकट और समुत्थान परकता, जवाहर पब्लिर्शस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
6. रावत, हरिकृष्ण, (2020), उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।